जिज्ञासु भक्तों के लिये

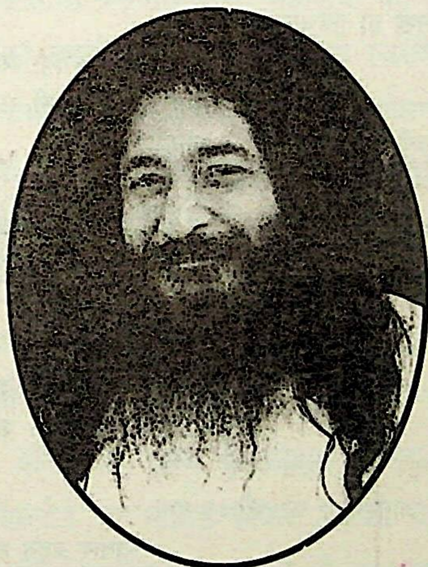
g.2
v2

सत्य की खोज



दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान

सत्य की खोज



श्री आशुतोष जी महाराज

प्रकाशक
दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान (रजि॰)
प्लाट नं॰ 3, पॉकेट-ओ.सी.एफ.,
पुष्पांजलि एन्कलेव के पीछे,
पीतमपुरा एक्सटैन्शन, दिल्ली-34
फोन : 27020666 4555



इसको देखोगे तो समझ जाओगे,
पढ़े लिखे हो पहचान जाओगे।

बहुत करीबी रिश्ता है,
जवाब मँहगा केवल यही सस्ता है।

कब, क्यूँ, कहाँ का विचार आयेगा,
शीष पर बना आकार प्रकट हो जायेगा।

इसे प्रश्न-चिन्ह कहते हैं,
जवाब से पहले पूछते हैं।

घटनाओं के बाद आता है,
अपनी छाप छोड़ जाता है।

अभी कुछ घटने वाला है,
यही चिन्ह लगने वाला है।

तुम तैयार और सजग रहना,
अपनी जागरुकता का परिचय देना।

विवाद बहुत मोटा है,
प्रश्न बहुत छोटा है।

क्या ईश्वर दिखाई देता है?
हाँ
ईश्वर दिखाई देता है।

सभी ग्रन्थों में प्रमाण है,
ब्रह्मज्ञान ही लक्ष्य-बाण है।

ब्रह्मज्ञान लक्ष्य को बेधता है,
तभी ईश्वर दिखाई देता है।

भूमिका

वेदान्त के प्रख्यात ग्रन्थ 'ब्रह्मसूत्र' का प्रथम ही सूत्र है–'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' अर्थात् ब्रह्म स्वरूप को जानने की तीव्र इच्छा। इस महा ग्रन्थ पर आदि शंकराचार्य जी का एक बृहत भाष्य है जो **'ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य'** नाम से प्रसिद्ध है। अत: आज हमें उसकी खोज करनी है जिसे पाने की लालसा हमारे मन में वर्षों से दबी हुई है, वह है 'परमात्मा'। परमात्मा उसे मिला, जिसने उसकी खोज की। परन्तु खोज, खोज में भी अंतर होता है। एक होती है जिज्ञासा और एक होता है कौतूहल। एक बालक का किसी खिलौने पर मोहित होकर उसकी प्राप्ति हेतु हठ कौतूहल है। खिलौना मिल जाने के बाद दूसरे दिन वह टूटा हुआ उपेक्षित सा घर के किसी कोने में पड़ा मिलता है। परन्तु जिज्ञासा का अर्थ है वस्तु की उपयोगिता व आवश्यकता समझते हुए उसके प्रति प्रबल इच्छा का होना। जैसे किसी मरूस्थल में प्यासे को पानी की खोज होती है, भुखमरी से पीड़ित व्यक्ति को भोजन की खोज होती है और पानी में डूब रहे व्यक्ति को श्वास की जरूरत

सताती है। ठीक इसी तरह जब कोई जिज्ञासु परमात्मा की खोज करता है तब उसे परमात्मा अवश्य ही प्राप्त हो जाता है।

ईसा मसीह कहते हैं:-

"Ask and it will be given to you;
seek and you will find;
knock and the door will be opened to you."

-श्री आशुतोष जी महाराज

सत्य की खोज

प्रभु में विश्वास रखने वाले लोग धार्मिक कार्यक्रमों व धर्मस्थलों में जाते हैं, वहाँ पर धार्मिक ग्रंथों को पढ़ते और सुनते हैं। कथावाचकों द्वारा प्रवचन भी श्रवण करते हैं। जिनमें यह अक्सर सुनने को मिलता है कि मनुष्य तन चौरासी लाख योनियों को भोगने के बाद मिला है और जीवात्मा केवल मनुष्य शरीर में ही प्रभु को मिल सकती है। परन्तु गुरु की कृपा के बिना कोई भी ईश्वर के दर्शन नहीं कर सकता। इसलिए गुरु की शरण प्राप्त करके ही यह जीव मनुष्य होने का लाभ उठा सकता है। जैसे भाई गुरदास जी कहते हैं:-

चिरंकाल मानस जनम निरमोल पाए,
सफल जनम गुरु चरण शरण कै॥

(भाई गुरदास जी, कबित्त-33)

बहुत समय के पश्चात हमें यह मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है जो कि अमूल्य है। कोई भी इसको कीमत अदा करके प्राप्त नहीं कर सकता, बल्कि यह तो प्रभु ने कृपा करके प्रदान किया है।

कबहुँक करि करुना नर देही।
देत ईस बिनु हेतु सनेही।।

(रा.च.मा.-7/43-3)

यह जीवात्मा चौरासी लाख योनियों में भटक रही थी और परमात्मा ने कृपा करके इसे मनुष्य शरीर प्रदान कर दिया। भाई गुरदास जी कहते हैं कि मनुष्य शरीर अमूल्य तो है परन्तु गुरु की शरण में जाकर ही यह सार्थक होता है।

जैसे रूप रंग बिधि पूछै अंध अंध प्रति,
आप ही न देखे ताहि कैसे कै दिखावई।
जैसे राग नाद पूछै बहरै जो बहिरा पै,
समझे न आप ताहि कैसे समझावई,
जैसे गुंग गुंग पहि बचन बिबेक पूछै,
बोल न सकत कैसे सबद सुनावई।
बिन सतगुरु खोजे ब्रह्म ज्ञान जोवै,
अनथा अज्ञान मति आन पै न पावई।।

(भाई गुरदास जी, कबित्त-474)

जैसे एक अंधा इन्सान किसी भी रंग–रूप की पहचान नहीं कर सकता, बहरा इंसान संगीत के बारे में नहीं बता सकता और गूंगा बोल कर नहीं बता सकता। इसी तरह अगर

कोई व्यक्ति चाहे कि वह गुरु के बिना ब्रह्म ज्ञान की खोज कर लेगा तो यह असंभव है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति ब्रह्मा जी, नारद जी और ऋषि वेद व्यास जी को भी नहीं हुई।

भाई रे गुरु बिन ज्ञान न होई।
पूछो ब्रह्मै नारदै बेद ब्यासे कोए।।

(गुरुवाणी-59)

गोस्वामी तुलसीदास जी श्रीरामचरितमानस में कहते हैं कि गुरु के बिना कोई भी भवसागर को पार नहीं कर सकता, चाहे वह ब्रह्मा जी और शिव जी के समान भी क्यों न हो।

गुरु बिनु भव निधि तरइ न कोई।
जौं बिरंचि संकर सम होई।।

(रा.च.मा.-7/92ख.-3)

परमात्मा की भक्ति संत महापुरुष की कृपा के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। भगवान श्रीकृष्ण श्री मद्भगवतगीता में अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं:-

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।।

(श्रीमद्भगवत गीता-4/34)

उस ज्ञान को तुम तत्त्वदर्शी महात्मा के पास जाकर

समझो, उनको श्रद्धा सहित दंडवत प्रणाम करो, उसकी सेवा करो और छल कपट छोड़ कर प्रेम सहित प्रश्न करो। वह परमात्मा को जानने वाले ज्ञानी लोग तुमको ज्ञान का उपदेश देंगे।

इस तरह सभी महापुरुषों ने एक ही बात को बार-बार कहा है कि ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति किसी पूर्ण सतगुरु के द्वारा ही हो सकती है।

परमात्मा को मानने वाले सभी लोग भक्ति कर रहे हैं और यह भी कह रहे हैं कि प्रभु एक है। अगर परमात्मा एक है तो फिर परमात्मा की भक्ति का मार्ग भी एक ही होनी चाहिए। परन्तु आजकल देखने में आता है कि मनुष्य ने भक्ति के अपने अलग-अलग ढंग बना लिए हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी भी कहते हैं:-

कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सद ग्रंथ।
दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ।।

(रा.च.मा.-7/97क)

अर्थात कलयुग में लोग धार्मिक ग्रंथों के आधार पर भक्ति नहीं करते, बल्कि दंभी और पाखंडी लोगों ने अपनी मनमति द्वारा अलग-अलग मार्ग बना लिए हैं। वास्तव में भक्ति तो उस समय ही शुरू होती है जब एक भक्त के

अंतर में परमात्मा की ज्योति प्रकट हो जाती है। जैसा कि मीराबाई अपने पद्य में कहती हैं:-

गुरु रैदास मिलै मोहिं पूरे, धुर से कलम भिड़ी।
सतगुरु सैन दई जब आके, जोत में जोत रली।।

यहाँ यह भी स्पष्ट होता है कि गुरु कृपा के द्वारा तीसरा नेत्र खुलता है और वास्तव में धार्मिक ग्रंथों की समझ भी तभी आती है। यह तथ्य गोस्वामी तुलसीदास जी भी श्रीरामचरितमानस में स्पष्ट करते है-

उघरहिं बिमल बिलोचन ही के।
मिटहिं दोष दुख भव रजनी के।।
सूझहिं राम चरित मनि मानिक।
गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक।।

(रा.च.मा.-1/5-4)

श्रीगुरु अमरदास जी कहते हैं-

कहै नानक इह नेत्र अंध से
सतगुरु मिलिए दिबि द्रिसटि होए।।

(गुरुवाणी-922)

परमात्मा को इन बाह्य आँखों के द्वारा नहीं देखा जा सकता। जब गुरु कृपा द्वारा दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है तब ही परमात्मा का दर्शन होता है। बहुत सारे लोग यह भी कहते हैं

कि अगर परमात्मा है तो वह हमें दिखाई क्यों नहीं देता?जब तक परमात्मा हमें दिखाई नहीं देगा, तब तक हम परमात्मा को नहीं मानेंगे। गुरु साहिब कहते हैं कि परमात्मा को देखा तो जा सकता है, परन्तु इन बाहरी नेत्रों द्वारा नहीं, बल्कि उस को देखने के लिए दिव्य दृष्टि की जरुरत है क्योंकि प्रभु को कोई भी व्यक्ति अपनी मन बुद्धि द्वारा नहीं समझ सकता। वह मन, बुद्धि और वाणी से परे है।

राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी।

(रा.च.मा.-1/120घ-2)

अगर कोई परमात्मा के विषय में तर्क देकर सोचे कि मैं उस के भेद को पा लूँगा तो ऐसा नहीं हो सकता! क्योंकि तर्क तो बुद्धि का विषय है और बुद्धि हर इन्सान के पास एक जैसी नहीं होती। जिसके पास ज्यादा बुद्धि होगी वह दूसरे को हरा देगा। इसलिए परमात्मा को बुद्धि द्वारा नहीं समझा जा सकता।

सर्व श्री आशुतोष जी महाराज को एक बार एक डाक्टर ने प्रश्न किया कि क्या परमात्मा है?महाराज जी ने उससे प्रश्न किया कि आपके पास दिव्य दृष्टि है या नहीं?उस डाक्टर ने हैरान होकर कहा कि यह दिव्य दृष्टि क्या होती है?तो महाराज जी ने कहा कि दिव्य दृष्टि से ही

परमात्मा का दर्शन होता है। फिर उस डाक्टर ने पूछा कि क्या परमात्मा हर वस्तु के अंदर है?महाराज जी ने कहा कि हाँ, वह प्रकाश रूप में सर्व व्यापक है। जैसा कि श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज कहते हैं:-

जिमी जमान के बिखे समसत एक जोत है।
न घाट है न बाढ है न घाट बाढ होत है।।

(दशम ग्रंथ)

यह सुनकर उस डाक्टर ने कहा कि परमात्मा मनुष्य के शरीर में भी होता है, तो महाराज जी ने कहा कि हाँ, वह मनुष्य के शरीर में भी है। डाक्टर ने कहा कि मैंने पैर के अंगूठे से सिर तक इन्सान के शरीर को चीर-फाड़ के देखा है। मुझे तो परमात्मा कहीं भी दिखाई नहीं दिया।

गुरु महाराज जी ने अपने शिष्य को कहा कि एक माचिस लेकर आओ। जब वह माचिस लेकर आया तो महाराज जी ने कहा कि डाक्टर साहब क्या आप मानते हो कि इस माचिस के तीली में भी आग है?उसने कहा-हाँ। महाराज जी ने उस तीली को टूकडों में बाँट कर कहा कि क्या इसके अंदर से आग निकली?डाक्टर ने कहा कि आग तो इसके अंदर ही है, परन्तु वह किसी विधि द्वारा प्रकट होगी। तब महाराज जी ने कहा कि ठीक उसी प्रकार

परमात्मा भी कण-कण के अंदर समाया हुआ है और वह भी किसी विधि के द्वारा ही प्रकट होता है। जब किसी पूर्ण संत महापुरुष की कृपा होती है तो फिर हमें दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है। और उस दृष्टि को प्राप्त करके ही परमात्मा का दर्शन सम्भव है।

जर्रे जर्रे में है झांकी भगवान की,

किसी सूझ वाली आँख ने पहचान की।

कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि परमात्मा का असली स्वरूप क्या है?धार्मिक ग्रंथों के अनुसार परमात्मा के दो रूप हैं, निरगुण और सगुण। सगुण रूप में वह अवतार धारण करता है और निरगुण रूप में वह प्रकाश है। जब वह सगुण रूप धारण करता है तो उसका रूप स्थाई नहीं होता। कुछ समय पश्चात उसको भी शरीर का त्याग करना पड़ता है। परन्तु प्रकाश रूप में वह स्थिर है और कभी भी बदलता नहीं। जैसे श्रीगुरु ग्रंथ साहिब जी में कहा गया है कि सतयुग के अंदर परमात्मा वामन रूप में प्रगट हुआ और उसने राजा बलि के साथ छल किया। त्रेता युग में वह श्रीराम रूप में जन्म लेकर रघुवंशी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। द्वापर युग में उस ने श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लेकर कंस को मारा व उग्रसेन को राज्य दिया और भक्तों को निर्भय किया। कलयुग

में वह श्रीगुरु नानकदेव जी के रूप में प्रगट हुआ।

सतजुग तै माणियो छलियो बलि बावन भायो।
तरेते तै माणियो राम रघुवंस कहायो॥
दुआपर क्रिसन मुरार कंस किरतारथ कीओ।
उग्रसेन को राज अभै भगतह जन दीयो॥
कलजुग परमाण नानक गुरु अंगद अमर कहायो।
श्री गुरु राज अबिचल अटल आदि पुरुख फुरमायो॥

(गुरुवाणी-1390)

श्रीरामचरितमानस में कहा गया है कि जब धरती पर पाप बढ़ जाता है, राक्षस बुद्धि वाले लोग बढ़ जाते हैं और वह ब्राह्मण, गाय, देवता और पृथ्वी आदि को इतना दुःखी करते हैं जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। ऐसे समय में परमात्मा शरीर धारण करके भक्तों के दुःखों को हरता है।

जब जब होइ धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
करहिं अनीति जाइ नहि बरनी।
सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥
तब तब प्रभु धरि विविध सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

(रा.च.मा.-1/120घ-3,4)

श्रीमद्भगवत गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे भारत! जब-जब भी धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब मैं अपने आप को शरीर रूप में प्रकट करता हूँ। सज्जन पुरुषों का कल्याण करने के लिए, दुष्टों का नाश करने के लिए और धर्म की पुनः स्थापना के लिए मैं हर युग में अवतरित होता हूँ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

(श्रीमद्भगवत गीता-4/7,8)

इस तरह वह प्रभु समय-समय पर शरीर धारण करता है। परन्तु उस शरीर का भी कुछ समय होता है। इसलिए गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि परमात्मा का सहज रूप प्रकाश है।

सहज प्रकाश रूप भगवाना।

(रा.च.मा.-1/115,3)

श्रीगुरु नानकदेव जी भी कहते हैं कि सब सुख देने वाला परमात्मा प्रकाश रूप है-

जोति सरूप सदा सुखदाता सचे सोभा पाएदा।।

(गुरुवाणी.-1036)

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि वह परमात्मा ज्योतियों की ज्योति है और माया से बहुत परे है। वह परमात्मा बोध स्वरूप, जानने योग्य, तत्त्व ज्ञान के द्वारा प्राप्त करने योग्य और सब प्राणियों के हृदय में विराजमान है।

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।।

(श्रीमद्भगवत गीता-13/17)

पवित्र बाइबल में भी कहा गया है:-

God is light in him there is no darkness at all.

वह ज्योति स्वरूप परमात्मा ही सगुण स्वरूप होकर संसार को उपदेश देता है। श्रीगुरु नानकदेव जी के बारे में श्रीगुरुग्रंथ साहिब जी में कहा गया है:-

जोति रूप हरि आप गुरु नानक कहायो।।

(गुरुवाणी-1408)

जब प्रकाश रूप परमात्मा ने शरीर धारण किया तब उस को गुरु नानक कहा गया। प्रभु श्रीराम जी के विषय में श्रीरामचरितमानस में लिखा है कि जिस शक्ति से सब कुछ

प्रकाशित होता है, जब उसने अयोध्या में जन्म लिया तब उसको अयोध्यापति कहा गया:-

सब कर परम प्रकासक जोई।
राम अनादि अवधपति सोई।।

(रा.च.मा.-1/116-3)

भगवान श्रीमद्भगवत गीता में कहते हैं कि हे अर्जुन! मैं सब प्राणियों के हृदय में स्थित सब की आत्मा हूँ और सभी कालों का आदि, मध्य और अन्त भी मैं ही हूँ।

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च।।

(श्रीमद्भगवत गीता-10/20)

इस तरह परमात्मा का सगुण स्वरूप बदलने वाला है परन्तु निर्गुण रूप में वह प्रकाश रूप है और न बदलने वाला है। उपनिषदों में कहा गया है:-

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

(श्वेताश्वतरोपनिषद्-3/8)

अर्थात् जो अज्ञानता रूपी अंधकार से परे सूर्य की भाँति अपने आप से प्रकाशमान है, उस महान पुरुष को मैं जानता हूँ। उस को जानकर ही मनुष्य मृत्यु को लांघ सकता

है और परम पद की प्राप्ति कर सकता है। उस को जाने बिना परम पद की प्राप्ति और मृत्यु से बचने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

यहाँ पर यह प्रश्न भी हल हो जाता है कि परमात्मा के ज्योति स्वरूप को देखा जा सकता है। श्रीगुरु अर्जुनदेव जी ने भी कहा है कि जब तक हम परमात्मा का दर्शन नहीं कर लेते तब तक उसके गुण नहीं गाए जा सकते। बल्कि तब तक हम उन अंधों की तरह हैं जो कुछ देख तो सकते नहीं परन्तु फिर भी किसी चीज को लेकर अपनी जिद पर अड़े हुए हैं कि वह इस तरह की ही होती है।

विणु डिठा किआ सलाहीए अंधा अंध कमाए।।

(गुरुवाणी-646)

जीसस कहते हैं–

Thine eyes be single, the whole body shall be full of light.

जब तीसरा नेत्र खुलता है तब परमात्मा के ज्योति स्वरूप का दर्शन होता है। जीसस ने भी अपने समय में यही ज्ञान प्रदान किया। जीसस ने यह भी कहा है कि मैं परमात्मा से प्रार्थना करूँगा कि वह आपके लिए एक संत महापुरुष को भेजे जो आकर यही ज्ञान देगा जो मैंने आपको दिया है।

I will pray to my father to send a messanger to you. He will remind the work which I have done before you.

क्योंकि ज्ञान कभी भी बदला नहीं:-

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका।
भए नाम जपि जीव बिसोका।।

(रा.च.मा.-1/26-1)

भगवान श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं कि इस अविनाशी ज्ञान को मैंने सूर्य को दिया, सूर्य ने अपने पुत्र मनु को और मनु ने अपने पुत्र राजा इक्ष्वाकु को दिया।

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तावानहमव्ययम्।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्।।

(श्रीमद्भगवत गीता-4/1)

श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी भी कहते हैं कि जिस नाम का सुमिरन ध्रुव, प्रहलाद, अजामिल और गनिका ने किया, उसी नाम का सुमिरन मैंने किया है-

आदि अनादि अगाध कथा ध्रुव से प्रह़लाद अजामिल तारे।
नाम उचार तरी गनिका सोई नाम अधार बिचार हमारे।।

इसलिए जीसस कहते हैं कि संत महापुरुष आकर उसी ज्ञान को प्रदान करेगा जिसको मैंने दिया है। जब ज्ञान की बात आती है तो लोग दो चार शब्दों के रटन को ही ज्ञान समझ लेते हैं। परन्तु श्रीमद्भगवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण

कहते हैं कि आध्यात्म ज्ञान उस तत्त्व का दर्शन करना है अर्थात् परमात्मा के ज्योति स्वरूप का दर्शन करना है, परमात्मा को देखना ही ज्ञान है तथा इसके अलावा बाकी सब कुछ अज्ञान ही कहा गया है:-

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा।।

(**श्रीमद्भगवत गीता**-13/11)

इसलिए अगर हमने परमात्मा का दर्शन अपने अंदर किया है तो हम ज्ञानी हैं, अगर दर्शन नहीं किया तो अज्ञानी हैं। वेदों में कहा गया है:-

अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्तपदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

अर्थात् जो परमात्मा अखण्ड है और जड़ चेतन में समाया हुआ है, उसके दर्शन करवाने वाले श्रीगुरु के चरणों में मेरा नमस्कार है। श्रीगुरु नानकदेव जी ने भी कहा है कि जो हमारे शरीर रूपी घर के अंदर परमात्मा के मंदिर को प्रगट कर दे वही पूर्ण सद्गुरु है-

घर महि घर दिखाए देइ सो सतगुरु पुरख सुजान।।

(**गुरुवाणी**-1291)

परन्तु आजकल गुरु धारण करने की जैसे दौड़ ही लगी हुई है। लोग कई-कई गुरु धारण कर रहे हैं। परन्तु जब

किसी से पूछा जाए कि क्या आपको परमात्मा की ज्योति का दर्शन हुआ? तब वह हैरान होकर कहते हैं कि यह कैसे हो सकता है? वह तो जब हम मेहनत करेंगे तब ही हो सकेगा। परन्तु हमने कभी यह सोचा है कि अगर अंधा इंसान कहे कि मैं अभ्यास करके संसार को देख लूँगा तो क्या यह संभव होगा? नहीं, कभी नहीं। बल्कि उसे एक ऐसे डाक्टर की जरुरत है जो उसकी आँख की चिकित्सा कर उसी समय संसार को दिखा दे। इसी तरह हमारे धार्मिक ग्रंथ कहते हैं कि जिस समय गुरु अपने शिष्य के सिर पर हाथ रखता है तो उसी समय वह परमात्मा का दर्शन करवा देता है।

श्रीगुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:-

सतिगुरु पुरुखि विखालया मसतकि धरि कै हथ जीयो।।

(गुरुवाणी-73)

श्री मद्‌भागवत महापुराण में भी लिखा है कि सात दिनों की कथा के बाद शुकदेव मुनि जी ने जब राजा परीक्षित के सिर पर हाथ रखा तब उस समय राजा परिक्षित को अपने शरीर के अंदर ही परमात्मा की ज्योति का दर्शन हुआ। इसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण भी अर्जुन को कहते हैं:-

न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्।।

(श्रीमद्‌भगवत गीता-11/8)

तुम मुझे इन आँखों के द्वारा नहीं देख सकते। इसलिए मैं तुम्हें दिव्य नेत्र प्रदान करता हूँ। जिससे तू मेरी ईश्वरीय योगशक्ति को देख सकेगा। जब अर्जुन को दिव्य दृष्टि की प्राप्ति हुई तब उसने अपने अंदर जो अनुभव किया उस का श्री मद्भगवत गीता में वर्णन इस प्रकार है:-

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः॥

(श्री मद्भगवत गीता-11/12)

जैसे हजारों सूर्य एक साथ आकाश में उदय हो जायें उस से भी ज्यादा प्रकाश दिखाई दे रहा है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यह नहीं कहा कि तू पहले युद्ध कर, फिर भक्ति करना, तब तुझे दर्शन होगा, बल्कि अर्जुन को उसी समय युद्ध के मैदान में परमात्मा के वास्तविक प्रकाश स्वरुप का दर्शन करवाया। परन्तु आजकल के गुरु कहते हैं कि पहले भक्ति करो तब हम आपको परमात्मा का दर्शन करवा देंगे। अगर वो परमात्मा का दर्शन करवा सकते हैं तो फिर उसी समय ही क्यों नहीं करवा देते?

आजकल गुरु दो चार शब्द पढ़ने को दे देते हैं और कई-कई घंटे यह समझाया जाता है कि अब आपने गुरु छोड़ना नहीं। नहीं, तो आपको बहुत पाप लगेगा। जबकि

ऐसी कोई बात नहीं है। अगर कोई शब्दों के रटन को नाम समझे तो यह किसी भी महापुरुष ने स्वीकार नहीं किया है। श्री गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि जिह्वा से तो परमात्मा के कृत्रिम नाम जपे जाते हैं परन्तु सच्चा नाम जिह्वा से नहीं बोला जा सकता:-

किरतम नाम कथै तेरी जीहबा।
सतनाम तेरा परा पूरबला।।

(गुरुवाणी-1083)

कबीरदास जी कहते हैं कि लोग जिह्वा से किसी शब्द का रटन करते हैं और हाथों से माला फेरते हैं परन्तु उनका मन दसों दिशाओं में घूमता रहता है। इसको परमात्मा का सुमिरन नहीं कहा जा सकता।

माला तो कर महि फिरै जीभ फिरै मुख माहि।
मनुआ तो दह दिसि फिरै यह तो सिमरन नाहि।।

वो कहते हैं कि हमें ऐसे गुरु की खोज करनी चाहिए जो हमारे अंदर ही परमात्मा का नाम प्रकट कर दे। उस का सुमिरन करते समय न तो हमारी जिह्वा हिले और न ही होंठ।

सतगुरु ऐसा कीजिए परे निशाने चोट।
सुमिरन ऐसा कीजिए जीभ हिले न होंठ।

साईं बुल्लेशाह भी कहते हैं–

आशिक पढ़न नमाज प्रेम दी जिस विच हरफ न कोई।
जीभ न हिले होंठ न हिले पाक नमाजी सोई।।

बाइबल में भी कहा गया है कि शुरु में वह शब्द था। वह शब्द परमात्मा के साथ था और शब्द ही परमात्मा था। सारी संरचना उसके द्वारा ही की गई, उसके बिना और कुछ भी नहीं है।

In the beginning was the word; and the word was with God; and the word was God. The same was in the beginning with God. All things made by him and without him was not anything made that was made.

श्रीगुरु नानकदेव जी भी कहते हैं:–

शब्दे धरती शब्दे आकाश।
शब्दे शब्द भया परगास।
सगली स्रिसटी शब्द के पाछै।
नानक शब्द घटे घटि आछै।।

(जन्म साखी)

अगर सारा संसार ही उस शब्द से पैदा हुआ है तो इसका अर्थ यह हुआ कि वह शब्द किसी भी भाषा का नहीं हो सकता क्योंकि यह भाषाएं तो संसार के सृजन होने के बाद बनी। इसलिए शब्दों के रटन को ज्ञान नहीं कहा जा

सकता। परन्तु आजकल यही देखने में आता है कि गुरु जी दो-चार शब्द देकर उसका जाप करने को कहते हैं और इन्हीं शब्दों को वे नाम कहते हैं। फिर समझाया जाता है कि अब आपने मुझे गुरु मान लिया है और गुरु जीवन में केवल एक बार ही धारण किया जाता है। इसलिए अब आपने कोई और गुरु धारण नहीं करना। परन्तु संत कबीर जी कहते हैं:-

जब तक गुरु मिले नहीं साचा।
दस बीस या करो पचासा।।

आजकल लोग भी लकीर के फकीर बने हुए हैं! गुरु की पहचान न होने के कारण अंधविश्वास में फँस जाते हैं। परन्तु धार्मिक ग्रंथ स्पष्ट करते हैं कि गुरु वही है जो परमात्मा की ज्योति का दर्शन करवा दे। जैसे श्रीगुरु नानकदेव जी कहते हैं:-

सब महि जोति जोति है सोए।
तिस दै चानण सब महि चानण होए।
गुरु साखी जोति परगट होए।।

(गुरुवाणी-13)

परन्तु कई लोग कहते हैं कि हमारे गुरु जी बहुत महान हैं क्योंकि हम तो कई सालों से उनके पास जाते हैं। ऐसे लोगों की हालत उस इंसान जैसी है जो अपनी ही पत्नी के विधवा होने पर रो रहा था।

एक कहानी है कि एक बार कुछ मित्रों ने मिलकर अपने ही एक अन्य मित्र को मूर्ख बनाने की योजना बनाई। वे सभी मिलकर अपने मित्र के पास गए और कहा कि तेरी पत्नी विधवा हो गई है। जैसे ही उसने यह सुना वह जोर-जोर से रोने लगा और अपने घर की तरफ चल दिया। रास्ते में एक बूढ़े व्यक्ति ने उसके रोने का कारण पूछा। तब उस ने कहा कि मेरी पत्नी विधवा हो गई है। उस बूढ़े व्यक्ति ने उस को समझाया कि जब तक तुम्हारी मृत्यु नहीं हो जाती, तब तक तुम्हारी पत्नी विधवा नहीं हो सकती। वह बड़ी मुश्किल से समझा और चुप हो गया। परन्तु जब चलने लगा तो फिर रोने लग पड़ा। बूढ़े व्यक्ति ने उसको फिर पूछा कि अब क्यों रो रहे हो?उस ने कहा कि बाबा जी आपकी बात भी ठीक है कि जब तक मेरी मृत्यु नहीं हो जाती तब तक मेरी पत्नी विधवा नहीं हो सकती। लेकिन जिन लोगों ने मेरी पत्नी के विधवा होने की बात मुझे बताई है वे भी झूठ नहीं बोल सकते क्योंकि वे तो मेरे बहुत पुराने मित्र हैं।

ऐसी हालत उन लोगों की है जो यह तो कहते हैं कि पूर्ण गुरु वही है जो परमात्मा की ज्योति का दर्शन करवा दे परन्तु जिनसे हम लोगों ने नाम लिया है चाहे उन्होंने हमें दर्शन नहीं भी करवाया, तो भी वे पूर्ण ही हैं। सत्य के

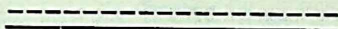
खोजियों को यह विचार करना ही होगा कि कहीं हमारी भी हालत उन लोगों की तरह तो नहीं?

किसी भी महापुरुष ने कभी यह नहीं कहा कि आप मेरे पास आकर ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति करो, बल्कि हर समय हर महापुरुष का एक ही उपदेश रहा है कि आपको ऐसे महापुरुष की जरुरत है जो आपका तीसरा नेत्र खोल कर परमात्मा क़ी ज्योति का दर्शन करवा दे।

इसी तरह दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान के संस्थापक एवं संचालक सर्व श्री आशुतोष महाराज जी यह नहीं कहते कि आप मेरे पास आकर ज्ञान प्राप्त करो, बल्कि उनका तो यही कहना है कि ऐसे गुरु की खोज करो, जो आपको परमात्मा की ज्योति का दर्शन दीक्षा के समय ही करवा दे। अगर आप को यह ज्ञान कहीं से भी नहीं मिलता तो आप दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान में आकर दिव्य दृष्टि को प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ पर यह नहीं कहा जाता कि आप केवल सुन कर ही विश्वास कर लें, बल्कि उस कसौटी के आधार पर ब्रह्मज्ञान प्राप्त करें, जिसके बारे में कबीर जी कहते हैं–

जब तक न देखूँ अपने नैनी।
तब तक न मानूँ गुरु की बैनी।

इसलिए हमें ऐसे गुरु की जरुरत है जो हमें केवल कथा कहानियों या शब्दों के साथ न रिझाए बल्कि वह दिव्य दृष्टि भी प्रदान करे, जिसके द्वारा हम भी परमात्मा के प्रकाश रूप के दर्शन अपने घट के भीतर ही कर सकें।



दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान

(कुछ शाखाओं के पते)

मुख्यालय :

प्लॉट-3, पॉकेट-ओ.सी.एफ, परवाना रोड, पुष्पांजलि एन्कलेव के पीछे, पीतमपुरा एक्स॰, दिल्ली-34 फोन : 91-11-27020666/27024555 फैक्स : 91-11-27032727 ई-मेल : info@divyajyoti.org
वैबसाईट : www.divyajyoti.org

शाखाएँ

दिल्ली

■ सी सी-29, नेहरु एन्कलेव, पारस सिनेमा के सामने, दिल्ली-19 फोन : 26295656 ■ के जी-1/357, विकास पुरी, दिल्ली-18 फोन : 25531628 ■ प्लाट-26, विश्वास नगर एक्स॰, नजदीक कड़कड़डूमा कोर्ट, यमुना पार, दिल्ली-93 फोन : 22308400 ■ जे-119, ग्राउण्ड फ्लोर, वेस्ट पटेल नगर, दिल्ली-8 फोन : 25889944 ■ ई-121-122, सेक्टर-1, महालक्ष्मी अपार्टमेन्ट के सामने, द्वारका, दिल्ली-45 फोन : 25080888 ■ ई-1/11/33, एम.आई.जी. फ्लैट, सेक्टर-15, रोहिणी, दिल्ली-85 फोन : 27298222

पंजाब

■ नकोदर रोड, नूरमहल, जिला-जालन्धर फोन : 01826-242913/243913 ई-मेल : djjsnrm@rediffmail.com ■ प्रेम कॉलोनी, डकाला रोड, नजदीक माई जी की सराय, पटियाला-147001 फोन : 0175-2321079 ■ म.नं. 4914, गली-4, मोहन नगर, सुल्तानविंड रोड, अमृतसर फोन : 0183-2582178 ■ ई-12/847, गली-1, थापर नगर, करतार कोल्ड स्टोर के पीछे, जालन्धर बाईपास, लुधियाना फोन : 0161-2746326 ■ ग्राम- डबवाली मलको की, तहसील-मलोट, जिला-मुक्तसर फोन : 01637-276503/276536 ■ दिव्य ज्योति नगर, फाज़िल्का अबोहर रोड, नज़दीक टी.वी. टॉवर, फाज़िल्का, जिला-फिरोज़पुर फोन : 01638-260472

चण्डीगढ़

■ 496-ए, सेक्टर-61, नज़दीक फेस-7, चण्डीगढ़ फोन : 0172-2662001

उत्तरांचल

■ 70, इंदिरा गांधी मार्ग, सत्यशील गैस गोदाम के सामने, निरंजनपुर, देहरादून फोन : 0135-2625577 ■ म.नं.-55, वार्ड-25, लक्ष्मी नारायण मोहल्ला, टूरिस्ट ऑफिस के पास, पौड़ी गढ़वाल फोन : 01368-223451 ■ रई धारा, धारचुला रोड़, नजदीक हनुमान मुर्ति, पिथोरागढ़ फोन : 05964-224692

उत्तर प्रदेश

■ एच.आई.जी.प्लाट नं.-23, ए.डी.ए कॉलोनी, प्रीतम नगर, इलाहाबाद-211011 फोन : 0532-2637522, 9415351156 ■ 5/301, कृष्णा कुंज, फायर ब्रिगेड कॉलोनी, गूलर रोड, अलीगढ़-202001 फोन : 0571-2521227 ■ एच.आई.जी.प्लाट नं.-सी-318, सिद्धार्थ नगर कॉलोनी, जी.डी.ए. तारामंडल के पास, गोरखपुर-273001 फोन : 09451563959, 09336848447 ■ ए-3, गली न. 2, सर्वोदय कॉलोनी, आई.टी.आई. के पीछे, मेरठ़-250001 फोन : 0121-2950129

बिहार

■ सत्तर कटैया, गाँव-पदमपुर, नजदीक पंचगछिया रेलवे स्टेशन, जिला-सहरसा फोन : 9431440344, 9934455904, 06478-282706

हरियाणा

■ आमीन रोड, कंग फार्म, नजदीक होम्योपैथिक फैक्ट्री, कुरुक्षेत्र फोन : 01744-324444 ■ कोठी नं॰ 891, सेक्टर-17, हुड्डा कॉलोनी, जगाधरी, यमुनानगर फोन : 01732-222891 ■ ई-280, पुरानी हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, सिरसा फोन : 01666-241227 ■ म.नं.499ए/27, गली नं. 7, मदन पुरी, गुडगांव फोन : 9910245461 ■ मकान नं. 1823, एम.आई.जी.बी. भवन, सैक्टर 11-12 पार्ट, नई हाऊसिंग बोर्ड, पानीपत फोन : 0180-2661496

जम्मू और कश्मीर

■ राजेन्द्र खोसला, एफ-312, हरि सिंह नगर, रिहाड़ी कॉलोनी, जम्मू फोन : 0191-2581624

महाराष्ट्र

■ चक्रेश्वर रोड के पास, संग्राम शिक्षक सोसायटी, देशमुख आली, चाकण, तालुका-खेड़, जिला- पुणे-410501 फोन : 02135-256391 ■ बी-78,

डुपलैक्स, रानी इंदरा बाई भोंसले विहार, तुलसी बाग, महल, नागपुर-440032 फोन : 09970262099 ■ 1, महाराष्ट्र बैंक कॉलोनी, पहली मंजिल, साई नगर, अमरावती- 444605 फोन: 0721-2511502 ■ पदमा नगर, उषा किरण थियेटर के पीछे, बार्शी रोड़, लातूर-413512 फोन: 02382-222231 ■ श्री चांदेवार किराना स्टोर्स, पहली मंज़िल, पंचशील चौंक, देवरी, गोंदिया फोन: 09423113538

कर्नाटक

■ न.10, हेसरधट्टा मेन रोड़, आठ माइल, रिलायन्स फ्रेश के पीछे, टी, दासरहल्ली, बंगलोर-560073 फोन : 080-22731441, 9845173601 ■ 51/2, वायु विहार, सिंगापुरा लेआउट, विद्यारण्यापुरा पोस्ट, एयर फोर्स स्टेशन के पास, जालाहाली ईस्ट, बंगलोर-560097 फोन : 080-28389929

मध्य प्रदेश

■ ए-1, आम्र विहार कॉलोनी, नयापुरा बस स्टेण्ड, कोलार रोड़, भोपाल फोन : 9826087902, 9425651566 ■ विशाल पेट्रोल पम्प के सामने, इंदौर रोड़, नसरुल्लागंज, जिला-सिहोर फोन : 07563-276728 ■ गायत्री विहार कॉलोनी, पिंटो पार्क, मुरार, ग्वालियर फोन: 0751-2666031

राजस्थान

■ ए-24 बी, पथ नं० 7, जमना नगर, सोडाला, जयपुर फोन : 0141-2221555, 3201555 ■ 6/5, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, कोठारी अस्पताल के पीछे, पाँचवाँ पुलिया, जोधपुर-342009 फोन : 0291-3204849 ■ भगतपुरा रोड़, कृषि विज्ञान केन्द्र, सांगरिया, जिला-हनुमानगढ़ फोन: 01499-221392

उड़ीसा

■ शर्राफ पेट्रोल पंप के सामने, खेतराजपुर, सम्बलपुर 768003 फोन : 0663-2545244

हिमाचल प्रदेश

■ कपूर भवन, परी महल, कुसुम्टी, शिमला फोन : 0177-2620587

स्वामी बाग, गाँव–इटावा इटारसी, तहसील–नसरुल्लागंज, जिला–सिहोर (मध्य प्रदेश) फोन: 07563–270145–46–47

राजस्थान :

बी–1/67, पर्णकुटी, पथ नं॰ 7, जमुना नगर, सोडाला, जयपुर फोन : 0141–2221555

उड़ीसा :

कन्ट्रैक्टर कॉलोनी, बुर्ला, जिला–सम्बलपुर

फोन : 0663–2431444

हिमाचल प्रदेश :

कपूर भवन, परी महल, कुसुम्टी, शिमला

फोन : 0177–2621356

ABROAD

JANAKPUR (NEPAL)

Khem Bahadur Kharka, Vill.-Dhungri Khola Gavisa, Ward No.5, P.O. Harion Distt. Sarlai

AUSTRALIA

96, Lovegrove Drive, Quakers Hill N.S.W. Sydney Post Code 2763 **Ph. :** 02-962-62730

U.S.A.

4925, South Mini Wawa, Fresno,
CALIFORNIA 93725
Ph. : 1-559-275-8672, 559-304-6481

दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान

द्वारा प्रकाशित अन्य प्रकाशन

हिन्दी

1) दिव्य ज्ञान प्रकाश
2) सत्य की खोज
3) ज्योत रूप हरि आप
4) दिव्य भजनावली (भाग-1)
5) ऐसा सतगुरु मेरा (भजन संग्रह)
6) गुरु क्यों और कैसा धारण करें?
7) दिव्य संदेश
8) जिन खोजा तिन पाइया
9) क्या ईश्वर दिखाई देता है?

पंजाबी

1) ज्ञान दीपक
2) सच दी खोज
3) ज्योत रूप हरि आप
4) सुर साधना (भजन संग्रह)
5) कि परमात्मा दिखाई दींदा है?
6) ज्ञान ज्योति
7) दिव्य संदेश
8) भक्त प्रह्लाद
9) श्रीगुरुग्रंथ साहिब जी पढ़न वालियां नूं विनती
10) गुरु क्यों अते केहो जेहा धारन करिए?

ENGLISH

1) Divine Knowledge
2) Search for Truth
3) An Insight into Spirituality
4) Frequently Asked Questions
5) Reformed Turn Reformers
6) The Gems of Spirituality
7) Let's Dive into the Pool of Devotion

अन्य भाषाएँ

1) सत्य की खोज (कन्नड़)
2) सत्य की खोज (बंगाली)
3) सत्य की खोज (नेपाली)
4) सत्य की खोज (उडिया)
5) सत्य की खोज (मराठी)
6) सत्य की खोज (असामी)
7) सत्य की खोज (गुजराती)
8) सत्य की खोज (तेलगू)
9) दिव्य ज्ञान प्रकाश (मराठी)
10) दिव्य ज्ञान प्रकाश (कन्नड़)
11) क्या ईश्वर दिखाई देता है? (तेलगू)

मासिक पत्रिका

1) अखण्ड ज्ञान (हिन्दी/अंग्रेज़ी)
2) अखण्ड ज्ञान (अंग्रेज़ी)
3) अखण्ड ज्ञान (पंजाबी)



विश्व में शांति कैसे आएगी?
ब्रह्मज्ञान से।
ब्रह्मज्ञान कहाँ से मिलेगा?
दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान से।

दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान

मुख्य भवन : प्लॉट नं० 3, पॉकेट ओ.सी.एफ., पीतमपुरा एक्स०, परवाना रोड, पुष्पांजलि एन्कलेव के पीछे, दिल्ली-110034 फोन : 91-11-27020666/4555
ई-मेल : info@divyajyoti.org वैबसाईट : www.divyajyoti.org